यीशु का जन्म

बाइबिल से, परमेश्वर के वाणी में कहानी

में पाया गया

मैथ्यू 1-2, ल्यूक 1-2

“जो आपके जीवन में प्रकाश देता है।”
प्लाज्म 119:130

लेखक Edward Hughes
व्याख्याकार M. Maillot
अनुवाद info@christian-translation.com
रूपान्तरकार E. Frischbutter; Sarah S.

60 कहानियों में से 36 (पहला)

M1914.org

Bible for Children, PO Box 3, Winnipeg MB R3C 2G1 Canada

अनुज्ञापत्र (लाइसेंस): आप इन कहानियों की छाया प्रति और मुद्रण करवा सकते हैं, बशर्ते कि बेचें नहीं।

ईश्वर (परमेश्वर) जानता है कि हमने ऐसे गुनाह किए हैं जिन्हें वह पाप कहता है. पाप की सज़ा मौत है.

ईश्वर (परमेश्वर) हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने पुत्र यीशु को भेजा कि हमारे पापों की सज़ा के रूप में वह टिकटी (क्रॉस) पर चढ़ कर अपने प्राणों की बलि दे दे. यीशु मरकर फिर जीवित हुआ और पुन: स्वर्ग चला गया. ईश्वर (परमेश्वर) अब हमारे पापों को क्षमा कर सकता है.

यदि आप अपने गुनाहों और पापों से बचना चाहते हैं तो उससे दुआ करें; प्रिय ईश्वर (परमेश्वर) मुझे विश्वास है कि यीशु ने मेरे लिए अपने जीवन की बलि दी और अब पुन: जीवित हुआ है. हे ईश्वर (परमेश्वर) तू मेरी ज़िंदगी में आ और मेरे पापों को माफ़ कर दे ताकि मैं एक नई ज़िंदगी जी सकूं और हमेशा हमेशा के लिए तेरे साथ रह सकूं. हे ईश्वर (परमेश्वर) मेरी मदद कर ताकि मैं तेरी संतान के रूप में तेरे लिए जी सकूं. आमीन. जॉन 3:16

बाइबल पढ़ें और प्रतिदिन ईश्वर (परमेश्वर) से बात करें.

हिन्दी Hindi

“ऐसा कैसे संभव हो सकता है?” लड़की ने आश्चर्यचकित होते हुए कहा। “मैं अबतक किसी भी पुरुष के साथ नहीं रही हूँ।” देवदूत ने मेरी से कहा कि बच्चे परमेश्वर का दिया होगा। कोई मानव उसका पिता नहीं होगा।
3
उस देवदूत ने मेरी से कहा कि उनकी चचेरी बहन एलिजाबेथ को बुढ़ापे में एक बच्चा हुआ था। यह भी एक चमत्कार ही था। जल्द ही मेरी एलिजाबेथ से मिली। उनदोनों ने परमेश्वर से प्रार्थना किया।
4
मेरी का जोसेफ नामक एक व्यक्ति से शादी हेतु सगाई हुई। जोसेफ यह जानकर उदास था कि मेरी को बच्चा होनेवाला है। वह सोच रहा था कि कोई और ही बच्चे का पिता है।
5
परमेश्वर के देवदूत ने एक दिन जोसेफ को सपने में कहा कि यह बच्चा परमेश्वर की संतान है। यीशु की देखभाल करने में जोसेफ मेरी की सहायता करता था।
6
जोसेफ परमेश्वर का आज्ञाकारी और उनमें विश्वास रखता था। वह अपने देश के कानून का भी पालन करता था। नये कानून के कारण कर भुगतान करने हेतु वह और मेरी अपने गृहशहर बेथेलहम छोड़ दिया।
7
मेरी बच्चे पाने को तैयार थी। पर जोसेफ को कहीं भी एक कमरा नहीं मिल सका। सभी सराय भरे हुए थे।
8
अंततः जोसेफ को एक अस्तबल मिला। जहाँ यीशु का जन्म हुआ। माँ ने उसे एक नाद में लिटा दिया, एक ऐसा जगह जहाँ जानवरों का खाना रखा जाता था।
9
नजदीक ही, गड़ेड़िया अपने सोए हुए भेंड़ों की रखवाली करता था। परमेश्वर का देवदूत वहाँ उपस्थित हुआ और उन्हें एक अद्भुत समाचार कहा।
10
“यहाँ डेविड के शहर में आज एक मुक्तिदाता शिशु का जन्म हुआ है जो परमेश्वर का मसीह है। तुम उस बच्चे को नाद में लेटा हुआ पा सकते हो।”
11
शीघ्र ही बहुत सारे उज्ज्वल देवदूत दिखायी दिए और वे सभ परमात्मा का प्रार्थना करते हुए कह रहा था, …
12
… “पृथ्वी पर शांति के लिए परमेश्वर का गौरव उच्चतम है, मनुष्य के लिए अच्छा होनेवाला है।”
13
वह गड़ेड़िया दौड़कर अस्तबल गया। उस बच्चे को देखने के बाद यीशु के संबंध में देवदूत द्वारा कही गई बातों के बारे में उन्होंने सबों से कहा।
14
चालीस दिनों के बाद जोसेफ और मेरी यीशु को येरूशलम के एक मंदिर में ले आए। वहाँ साइमन नामक एक व्यक्ति बच्चे के लिए परमेश्वर से प्रार्थना किया, जबकि बूढ़े अन्ना तथा परमेश्वर के अन्य सेवकों ने धन्यवाद दिया।
15
दोनों जानते थे कि यीशु परमात्मा की संतान है, वचनबद्ध मुक्तिदाता। जोसेफ ने दो पक्षियों की बलि दी। यह परमेश्वर का नियम था कि किसी भी गरीब को नवजात शिशु हो तो वह ऐसा करे।
16
कुछ समय बाद एक खास चतुर व्यक्ति उनको येरूशलम के एक पूर्वी प्रान्त का रास्ता दिखाया।
“वह कहाँ है जो ज्यूस का राजा पैदा हुआ है?” उसने कहा। “हमलोग उसकी पूजा करना चाहते हैं।”
17
राजा हेरोद उस चतुर व्यक्ति के संबंध में सुना। उसने उनसे कहा कि वो जब भी यीशु को देखे, मुझे कहे। “मैं भी उसकी पूजा करना चाहता हूँ।” हेरोद ने कहा। किन्तु वह झूठ बोल रहा था। हेरोद यीशु को मारना चाहता था।
18